

२५. भगवान्‌हं आदि वन्दन सूत्र

भगवान्‌हं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्व-साधुहं. १.

शब्दार्थ :-

भगवान्‌हं उ भगवन्तो को वन्दन हो

आचार्यहं उ आचार्यों को वन्दन हो

उपाध्यायहं उ उपाध्यायों को वन्दन हो

सर्व-साधुहं उ सर्व साधुओं को वन्दन हो

गाथार्थ :-

भगवन्तो को वन्दन हो, आचार्यों को वन्दन हो, उपाध्यायों को वन्दन हो, सर्व साधुओं को वन्दन हो. १.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र के प्रत्येक पद को खमासमण सूत्र के साथ बोलकर भगवान्‌ आदि को नमस्कार किया जाता है.

25. bhagavānham ādi vandana sūtra

bhagavānham, ācāryaham, upādhyāyaham, sarva-sādhuham.
.1.

Literal meaning :-

bhagavānham = be obeisance to the bhagavantas

ācāryaham = be obeisance to the ācāryas

upādhyāyaham = be obeisance to the upādhyāyas

sarva-sādhuham = be obeisance to all the sādhus

Stanzaic meaning :-

Be obeisance to the bhagavantas, be obeisance to the ācāryas, be obeisance to the upādhyāyas and be obeisance to all the sādhus. 1.

Introduction of the sūtra :-

Salutation is being offered to the bhagavāna etc. uttering each phrase of this sūtra along with khamāsamaṇa sūtra.

२६. देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ पडिक्कमणे
ठाउं? इच्छं, सव्वस्स वि देवसिअ, दुच्चिंतिअ,
दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छा मि दुक्कडं. १.

शब्दार्थ :-

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! उ हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान
कीजिए

इच्छाकारेण उ स्वेच्छा से, संदिसह उ आज्ञा प्रदान कीजिए,
भगवन् उ हे भगवान्

देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ? उ देवसिअ इद्रैवसिकट प्रतिक्रमण
इद्रिवस संबंधी प्रतिक्रमण / दिवस दौरान किये हुए पापों के
प्रतिक्रमण में स्थिर रहूं ?

देवसिअ उ देवसिअ, पडिक्कमणे उ प्रतिक्रमण में, ठाउं ? उ
स्थिर रहूं?

इच्छं उ मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ

26. devasia paḍikkamaṇe ṭhāu? sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! devasia paḍikkamaṇe
ṭhāu? iccham, savvassa vi devasia, duccintia,
dubbhāsia, ducchiṭṭhia, micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavān! kindly give me the
permission voluntarily

icchākāreṇa = voluntarily, sandisaha = give me the permission, bhagavan
= oh bhagavān!

devasia paḍikkamaṇe ṭhāu? = shall i concentrate in devasia [daivasika]
pratikramaṇa [pratikramaṇa of the day / pratikramaṇa of the misdeeds
committed during the day time]

devasia = in devasia, paḍikkamaṇe = pratikramaṇa, ṭhāu? = shall i
concentrate?

iccham = i obey [accept] your orders

सव्वस्स वि उ सभी

देवसिअ उ दैवसिक

दुच्चिंतिअ उ दुष्ट इआर्त ध्यान और रौद्र ध्यान से होने वाले चिंतन संबंधी

दुब्भासिअ उ दुष्ट इस्सावद्यट भाषण संबंधी

दुच्चिट्ठिअ उ दुष्ट चेष्टा इनिषिद्ध क्रियाट संबंधी

मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों

मिच्छा उ मिथ्या हों, मि उ मेरे, दुक्कडं उ दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

दैवसिक प्रतिक्रमण में स्थिर रहूँ ? इहसकीट हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो । मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. दुष्ट चिंतन, दुष्ट भाषण और दुष्ट चेष्टाओं संबंधी मेरे सभी देवसिक दुष्कृत्य मिथ्या हों.१.

विशेषार्थ :-

देवसिअ इद्रैवसिकट प्रतिक्रमण उ दिवस के अंत में किया जाने वाला प्रतिक्रमण.

savvassa vi = all

devasia = of the day

duccintia = concerning evil thoughts [occurring due to āṛta dhyāna and raudra dhyāna]

dubbhāsia = concerning evil talks / words

duccitt̥hia = concerning evil deeds [forbidden deeds]

micchā mi dukkaḍam = my misdeeds may become fruitless

micchā = may become fruitless, mi = my, dukkaḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

Shall I concentrate in devasia pratikramaṇa? Oh bhagavān! kindly give me the permission voluntarily [for it]. I accept your orders. All my misdeeds concerning evil thoughts, evil words and evil deeds of the day may become fruitless. ... 1.

Specific meaning :-

devasia [daivasika] pratikramaṇa = pratikramaṇa performed at the end of the day.

सूत्र परिचय :-

दिन में किए हुए समस्त पापों का संक्षिप्त वर्णन करके इस सूत्र से प्रतिक्रमण करने के लिये स्थिर हुआ जाता है.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, firmness is being done to perform **pratikramaṇa** briefly describing all the sins committed during the day.

२७. इच्छामि ठामि सूत्र

इच्छामि ठामि काउस्सगं, जो मे देवसिओ अइयारो
 कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मगो,
 अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,
 अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,
 नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते, सुए, सामाइए,
 तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,
 पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं,
 चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स,
 जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.. १.

शब्दार्थ :-

इच्छामि ठामि काउस्सगं उ मैं कायोत्सर्ग में स्थिर होना चाहता हूँ
 इच्छामि उ मैं चाहता हूँ, ठामि उ स्थिर होना, काउस्सगं उ
 कायोत्सर्ग में

27. icchāmi ṭhāmi sūtra

icchāmi ṭhāmi kāussaggam, jo me devasio aiyāro kao,
 kāio, vāio, māṇasio, ussutto, ummaggo,
 akappo, akaraṇijjo, dujjhāo, duvvicintio,
 aṇāyāro, aṇicchiavvo, asāvaga-pāuggo,
 nāṇe, dansaṇe, carittā-caritte, sue, sāmāie,
 tiṇham guttiṇam, caṇham kasāyāṇam,
 pañcaṇha-maṇuvvayāṇam, tiṇham guṇa-vvayāṇam,
 caṇham sikkhā-vayāṇam, bārasa-vihassa sāvaga-
 dhammassa, jam khaṇḍiam jam virāhiam, tassa micchā mi
 dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

icchāmi ṭhāmi kāussaggam = i am willing to be concentrated in kāyotsarga
 icchāmi = i am willing, ṭhāmi = to be concentrated, kāussaggam = in

जो मे देवसिओ अइयारो कओ उ मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुआ हो
 जो उ जो, मे उ मेरे द्वारा, देवसिओ उ दिवस में, अइयारो उ अतिचार, कओ उ हुआ हो
 काइओ वाइओ माणसिओ उ काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा
 काइओ उ काया द्वारा, वाइओ उ वाणी द्वारा, माणसिओ उ मन द्वारा
 उस्सुत्तो उ उत्सूत्र इस्सूत्र के विरुद्ध कहने से
 उम्मग्गो उ उन्मार्ग में इम्मार्ग के विरुद्ध चलने से
 अकप्पो उ अकल्पनीय इआचार के विरुद्ध वर्तन करने से
 अकरणिज्जो उ अकरणीय इअयोग्यट कार्य करने से
 दुज्झाओ उ दुष्ट ध्यान इआर्त्त या रौद्र ध्यानट करने से
 दुव्विचिंतिओ उ दुष्ट चिंतन करने से
 अणायारो उ अनाचार इअ आचरने योग्य आचरणट करने से
 अणिच्छिअव्वो उ अनिच्छित इअन से न चाहने योग्यट वर्तन करने से
 असावग-पाउग्गो उ श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से
 असावग उ श्रावक के विरुद्ध, पाउग्गो उ आचरण करने से

kāyotsarga

jo me devasio aiyāro kao = the violations which are committed by me during the day

jo = which, me = by me, devasio = during the day, aiyāro = the violations, kao = are committed

kāio vāio māṇasio = by deeds, by words, by thoughts

kāio = by deeds, vāio = by words, māṇasio = by thoughts

ussutto = by speaking against the sūtras

ummaggo = by acting in wrong way

akappo = by acting against the prescribed code of conduct

akaraṇijjo = by doing undesirable activities

dujjhāo = by evil concentration [ārtta or raudra dhyāna]

duvvicintio = by ill-thinking

aṇāyāro = by doing improper behaviour

aṇicchiavvo = by doing acts undesirable [by the heart]

asāvaga-pāuggo = by acting against the code of conduct fit for a śrāvaka

नाणे दंसणे उ ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी
 नाणे उ ज्ञान संबंधी, दंसणे उ दर्शन संबंधी
 चरित्ताचरित्ते उ देश-विरति चारित्र संबंधी
 सुए सामाइए उ श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी
 सुए उ श्रुत ज्ञान संबंधी, सामाइए उ सामायिक संबंधी
 तिण्हं गुत्तीणं उ तीन गुप्तियों संबंधी
 तिण्हं उ तीन, गुत्तीणं उ गुप्तियो संबंधी
 चउण्हं कसायाणं उ चार कषाय संबंधी
 चउण्हं उ चार, कसायाणं उ कषाय संबंधी
 पंचण्ह-मणु-व्वयाणं उ पांच अणु व्रत में
 पंचण्हं उ पांच, अणु उ अणु, व्वयाणं उ व्रत में
 तिण्हं गुण-व्वयाणं उ तीन गुण व्रत में
 गुण उ गुण
 चउण्हं सिक्खा-वयाणं उ चार शिक्षा व्रत में
 सिक्खा उ शिक्षा, वयाणं उ व्रत में
 बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स उ बारह प्रकार के इन्नत रूपीट श्रावक
 धर्म में
 बारस उ बारह, विहस्स उ प्रकार के, सावग उ श्रावक, धम्मस्स

asāvaga = against a śrāvaka, pāuggo = by acting
 nāṇe dāsaṇe = regarding jñāna, regarding darśana
 nāṇe = regarding jñāna, dāsaṇe = regarding darśana
 carittācaritte = about deśa-virati cāritra
 sue sāmāie = about śruta jñāna, about sāmāyika
 sue = about śruta jñāna, sāmāie = about sāmāyika
 tiṇhaṃ guttiṇaṃ = about three guptis
 tiṇhaṃ = three, guttiṇaṃ = about guptis
 caṇhaṃ kaṣāyāṇaṃ = about four kaṣāyas
 caṇhaṃ = four, kaṣāyāṇaṃ = about kaṣāyas
 pañcaṇha-maṇu-vvayāṇaṃ = in five small [partially observed] vows
 pañcaṇhaṃ = five, aṇu = small, vvayāṇaṃ = in vows
 tiṇhaṃ guṇa-vvayāṇaṃ = in three characteristic vows
 guṇa = characteristic
 caṇhaṃ sikkhā-vayāṇaṃ = in four moral [educational] vows
 sikkhā = moral, vayāṇaṃ = in vows
 bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa = in twelve types [of vows] of śrāvaka's
 dharma [code of conduct]

उ धर्म में
जं खंडिअं जं विराहिअं उ जो खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो

जं उ जो, खंडिअं उ खंडना हुई हो, विराहिअं उ विराधना हुई हो

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों
तस्स उ वे, मिच्छा उ मिथ्या हो, मि उ मेरे, दुक्कडं उ दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

मैं कायोत्सर्ग में स्थिर होना चाहता हूँ. काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा, उत्सूत्र कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से, श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से, ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी, देश-विरति चारित्र संबंधी, श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी, तीन गुप्तियों संबंधी, चार कषाय संबंधी और पांच अणु व्रत में, तीन गुण व्रत में, चार शिक्षा व्रत में - बारह प्रकार के श्रावक धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे

bārasa = twelve, vihasa = types of, sāvaga = śrāvaka's, dhammassa = in dharma [code of conduct]

jam khaṇḍiam jam virāhiam = violations which are committed, faults which are committed

jam = which, khaṇḍiam = violations are committed, virāhiam = faults are committed

tassa micchā mi dukkaḍam = those misdeeds of mine may become fruitless
tassa = those, micchā = may become fruitless, mi = of mine, dukkaḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

I am willing to be concentrated in kāyotsarga. The violations which are committed by me during the day by deeds, by words, by thoughts, by speaking against the sūtras, by acting in wrong way, by acting against the prescribed code of conduct, by doing undesirable activities, by evil concentration, by ill-thinking, by doing improper behaviour, by doing acts undesirable, by acting against the code on conduct fit for a śrāvaka, regarding jñāna, regarding darśana, about deśa-virati cāritra, about śruta jñāna, about sāmāyika, about three guptis,

द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए हों, मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.

विशेषार्थ :-

सूत्र उ सर्वज्ञ या आप्त पुरुषों द्वारा कथित वचनों की रचना.

उन्मार्ग उ क्षायोपशमिक भाव को छोड़कर **औदयिक भाव** में प्रवेश करना.

क्षायोपशमिक भाव उ उदय में आये हुए **कर्मों** को क्षय करने पर और उदय

में न आये हुए **कर्मों** का उपशमन करने पर उत्पन्न होने वाले भाव.

औदयिक भाव उ कर्मोदय से उत्पन्न होने वाले भाव.

कर्मोदय उ पूर्व में की हुई शुभाशुभ प्रवृत्तियों से बंधे **कर्म** का उदय होने पर प्रकट होने वाला फल.

देश-विरति चारित्र उ आंशिक रूप में **चारित्र** का पालन करना.

चारित्र उ सावद्य इहेंसक / पापमयट योग से निवृत्ति.

आर्त्त ध्यान उ दुःख, मुसीबत, विटंबना और निराशा प्रधान दुष्ट चिंतन / अनिष्ट संयोग, इष्ट वियोग, रोग व **निदान** संबंधी दुष्ट ध्यान.

रौद्र ध्यान उ हिंसा, झूठ, चोरी और परिग्रह संबंधी दुष्ट चिंतन.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से **श्रावक** के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों का संक्षेप

about four **kaṣāyas** and in five small vows, in three characteristic vows, in four moral vows-- in twelve types of **śrāvakas** code of conduct, violations which are committed, faults which are committed, those misdeeds of mine may become fruitless.

Specific meaning :-

sūtra = Composition of discourses spoken by **sarvajña** or reliable persons.

unmārga = To enter into **audayika bhāva** leaving **kṣāyopaśamika bhāva**.

kṣāyopaśamika bhāva = The emotions occurring on destroying the **karmas** fruitifying and mitigating the **karmas** not fruitifying.

audayika bhāva = The emotions occurring by the fruitification of **karma**.

karmodaya = The fruits resulting from **karmas** binded by good and evil activities done in the past.

deśa-virati cāritra = To observe **cāritra** partially.

cāritra = To retire from violent [sinful] activities.

ārtta dhyāna = Evil thinking mainly about unhappiness, troubles, tough conditions and disappointment / evil thinking about coincidence of undesired separation

में वर्णन कर **प्रतिक्रमण** करने के लिये **कायोत्सर्ग** का संकल्प किया जाता है.

of the desired, disease and **nidāna** [determination].

raudra dhyāna = Evil thinking regarding violence, lie, theft and possessions.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, determination of **kāyotsarga** is being done to perform **pratikramaṇa** describing in brief the violations attached to the conducts and twelve vows of the **śrāvaka**.

२८. पंचाचार के अतिचार

नाणम्मि दंसणम्मि अ,

चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि.

आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ. १.

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे.

वंजण-अत्थ-तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो. २.

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ.

उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ. ३.

पणिहाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं.

एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो. ४.

बारस-विहम्मि वि तवे, सब्भितर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे.

अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो. ५.

अणसण-मूणोअरिया, वित्ति-संखेवणं रसच्चाओ.

काय-किलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ. ६.

28. pañcācāra ke aticāra

nāṇammi danṣaṇammi a,

caraṇammi tavammi taha ya vīriyammi.

āyaraṇaṃ āyāro, ia eso pañcahā bhaṇio. 1.

kāle viṇae bahumaṇe, uvahāṇe taha anīhavaṇe.

vañjaṇa-attha-tadubhae, aṭṭhaviho nāṇamāyāro. 2.

nissaṅkia nikkaṅkhia, nivviticchā amūḍha-diṭṭhī a.

uvavūha-thirīkaṇe, vacchalla-pabhāvaṇe aṭṭha. 3.

paṇihāṇa-joga-jutto, pañcahim samiīhim tīhim guttīhim.

esa carittāyāro, aṭṭhaviho hoi nāyavvo. 4.

bārasa-vihammi vi tave, sabbhintara-bāhire kusala-diṭṭhe.

agilāi aṇājīvī, nāyavvo so tavāyāro. 5.

aṇasaṇa-mūṇoariyā, vitti-saṅkhevaṇaṃ rasaccāo.

kāya-kilesa sanlīṇayā ya bajjho tavo hoi. 6.

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ.
 झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भितरओ तवो होइ. ७.
 अणिगूहिअ-बल-वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो.
 जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो. ८.
 शब्दार्थ :-

१. नाणम्मि दंसणम्मि अ चरणम्मि उ ज्ञान, दर्शन और चारित्र
 संबंधी
 नाणम्मि उ ज्ञान, दंसणम्मि उ दर्शन, अ उ और, चरणम्मि उ
 चारित्र संबंधी
 तवम्मि तह य वीरियम्मि आयरणं आयारो उ तथा तप और वीर्य
 इआत्मबलट संबंधी आचरण आचार है
 तवम्मि उ तप, तह उ तथा, य उ और, वीरियम्मि उ वीर्य,
 आयरणं उ आचारण, आयारो उ आचार
 इअ एसो पंचहा भणिओ उ इस तरह यह इआचारट पाँच प्रकार का
 कहा गया है
 इअ उ इस तरह, एसो उ यह, पंचहा उ पांच प्रकार का, भणिओ
 उ कहा गया है

pāyacchittam viṇao, veyāvaccam taheva sajjhāo.
 jhāṇam ussaggo vi a, abbhintarao tavo hoi.7.
 aṇigūhia-bala-vīrio, parakkamai jo jahuttamāutto.
 juñjai a jahāthāmam, nāyavvo vīriyāyāro.8.

Literal meaning :-

1. nāṇammi daṇsaṇammi a caraṇammi = about jñāna, darśana and cāritra
 nāṇammi = about jñāna, daṇsaṇammi = darśana, a= and, caraṇammi =
 cāritra
 tavammi taha ya vīriyammi āyaraṇam āyāro = and practice about tapa and
 vīrya [psychic strength] is ācāra [conduct]
 tavammi = about tapa, taha = and, ya = and, vīriyammi = vīrya,
 āyaraṇam = practice, āyāro = is ācāra
 ia eso pañcahā bhaṇio = in this way this [ācāra] is said to be of five types

 ia = in this way, eso = this, pañcahā = of five types, bhaṇio = is said to
 be
 2. kāle viṇae bahumāṇe = about proper time, proper respect and reverence

२.काले विणए बहुमाणे उ काल, विनय, बहुमान संबंधी
 काले उ काल, विणए उ विनय, बहुमाणे उ बहुमान संबंधी
 उवहाणे तह अनिहवणे उ उपधान और अनिहवता संबंधी
 उवहाणे उ उपधान, अनिहवणे उ अनिहवता संबंधी
 वंजण-अत्थ-तदुभए उ व्यंजन, अर्थ और इन दोनों संबंधी
 वंजण उ व्यंजन, अत्थ उ अर्थ, तदुभय उ इन दोनों संबंधी
 अट्ठ-विहो नाणमायारो उ आठ प्रकार का ज्ञानाचार है
 अट्ठ उ आठ, विहो उ प्रकार का, नाणमायारो उ ज्ञानाचार है
 ३.निस्संकिअ निक्कंखिअ उ निःशंकता, निष्कांक्षता
 निस्संकिअ उ निःशंकता, निक्कंखिअ उ निष्कांक्षता
 निव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ उ निर्विचिकित्सा और अमूढ दृष्टि
 निव्वितिगिच्छा उ निर्विचिकित्सा, अमूढ उ अमूढ, दिट्ठी उ
 दृष्टि
 उववूह थिरीकरणे उ प्रशंसा, स्थिरीकरण
 उववूह उ प्रशंसा, थिरीकरणे उ स्थिरीकरण
 वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ उ वात्सल्य और प्रभावना- इन्द्रशनाचारट
 आठ प्रकार का है
 वच्छल्ल उ वात्सल्य, पभावणे उ प्रभावना, अट्ठ उ आठ प्रकार

kāle = about proper time, viṇae = proper respect, bahumāṇe = reverence
 uvahāṇe taha aniṇhavaṇe = about upadhāna and anihnavatā
 uvahāṇe = about upadhāna, aniṇhavaṇe = anihnavatā
 vañjaṇa-attha-tadubhae = about consonant, meaning and both of these
 vañjaṇa = about consonant, attha = meaning, tadubhaya = both of these
 atṭha-viho nāṇamāyāro = jñānācāra is of eight types
 atṭha = of eight, viho = types, nāṇamāyāro = jñānācāra is
 3.nissaṅkia nikkaṅkhia = unsuspectingness, undesirous
 nissaṅkia = unsuspectingness, nikkaṅkhia = undesirous
 nivviticchā amūḍha-diṭṭhī a = undelusiveness and uninfatuated view
 nivviticchā = undelusiveness, amūḍha = uninfatuated, diṭṭhī = view
 uvavūha thirīkaṇe = admiration, steadiness
 uvavūha = admiration, thirīkaṇe = steadiness
 vacchalla-pabhāvaṇe atṭha = affection and influence-- [darśanācāra] is of
 eight types
 vacchalla = affection, pabhāvaṇe = influence, atṭha = is of eight types

का है
 ४. पणिहाण-जोग-जुत्तो उ चित्त की समाधि पूर्वक
 पणिहाण उ चित्त की, जोग उ समाधि, जुत्तो उ पूर्वक
 पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं उ पाँच समिति और तीन गुप्तियों इक्रा
 पालनट
 पंचहिं उ पांच, समिईहिं उ समिति, तीहिं उ तीन, गुत्तीहिं उ
 गुप्तियों
 एस उ यह
 चरित्ता-यारो अट्ठविहो होइ नायव्वो उ आठ प्रकार का चारित्राचार
 जानने योग्य है
 चरित्तायारो उ चारित्राचार, होइ उ है, नायव्वो उ जानने योग्य
 ५. बारस-विहम्मि उ बारहों प्रकार का
 बारस उ बारहों, विहम्मि उ प्रकार का
 वि तवे सब्भितर बाहिरे उ आभ्यंतर और बाह्य तप
 वि उ और, तवे उ तप, सब्भितर उ आभ्यंतर, बाहिरे उ बाह्य
 कुसल-दिट्ठे उ कुशल इज्जिनेश्वरोंट द्वारा देखा गया इक्रथितट है
 कुसल उ कुशल द्वारा, दिट्ठे उ देखा गया है
 अगिलाइ अणाजीवी उ ग्लानि रहित और आजीविका के हेतु रहित

4. paṇihāṇa joga-jutto = with peacefulness of mind / concentration
 paṇihāṇa = of mind, joga = peacefulness, jutto = with
 pañcahim samīhim tīhim guttīhim = [observance of] five samitis and three
 guptis
 pañcahim = five, samīhim = samitis, tīhim = three, guttīhim = guptis
 esa = this
 carittā-yāro aṭṭhaviho hoi nāyavvo = cāritrācāra of eight types is worth
 knowing
 carittāyāro = cāritrācāra, hoi = is, nāyavvo = worth knowing
 5. bārasa-vihammi = all the twelve types of
 bārasa = all the twelve, vihammi = types of
 vi tave sabbhīntara bāhire = internal and external penance
 vi = and, tave = penance, sabbhīntara = internal, bāhire = external
 kusala-ditṭhe = is seen [said] by the proficient [jīneśvaras]
 kusala = by the proficient, ditṭhe = is seen
 agilāi aṇājīvī = without regret and without the aim of livelihood
 agilāi = without regret, aṇājīvī = without the aim of livelihood

अगिलाइ उ ग्लानि रहित, अणाजीवी उ आजीविका के हेतु रहित
 नायव्वो सो तवायारो उ वह तपाचार जानने योग्य है
 नायव्वो उ जानने योग्य है, सो उ वह, तवायारो उ तपाचार
 ६.अणसण-मूणोअरिया उ उपवास, ऊनोदरता
 अणसणं उ उपवास, उणोअरिया उ ऊनोदरता
 वित्ति-संखेवणं रसच्चाओ उ वृत्ति संक्षेप, रस त्याग

 वित्ति उ वृत्ति, संखेवणं उ संक्षेप, रस उ रस, च्चाओ उ त्याग
 काय-किलेसो संलीणया य उ काय क्लेश और संलीनताइस्संकोचनट
 काय उ काय, किलेसो उ क्लेश, संलीणया उ संलीनता
 बज्झो तवो होइ उ बाह्य तप है
 बज्झो उ बाह्य, तवो उ तप
 ७.पायच्छित्तं विणओ उ प्रायश्चित्त, विनय
 पायच्छित्तं उ प्रायश्चित्त, विणओ उ विनय
 वेयावच्चं तहेव सज्झाओ उ वैयावृत्त्य और स्वाध्याय
 वेयावच्चं उ वैयावृत्त्य, तहेव उ और, सज्झाओ उ स्वाध्याय
 ज्ञाणं उस्सग्गो वि अ उ ध्यान और उत्सर्ग इत्यागत

nāyavvo so tavāyāro = that tapācāra [conduct of penance] is worth knowing
 nāyavvo = is worth knowing, so = that, tavāyāro = conduct of penance
 6.aṇasaṇa-mūṇoariyā = fast, eating less
 aṇasaṇam = fast, ūṇoariyā = eating less
 vitti-saṅkhevaṇam rasaccāo = abridgement of eatables / taking less items of
 food, giving up of tastefulness
 vitti = eatables, saṅkhevaṇam = abridgement of, rasa = of tastefulness,
 ccāo = giving up
 kāya-kilesa sanlīṇayā ya = physical sufferings and contraction
 kāya = physical, kilesa = sufferings, sanlīṇayā = contraction
 bajjho tavo hoi = are external forms of penance
 bajjho = external forms, tavo = of penance, hoi = are
 7.pāyacchitam viṇao = repentance, politeness
 pāyacchitam = repentance, viṇao = politeness
 veyāvaccam taheva sajjhāo = service and self study
 veyāvaccam = service, taheva = and, sajjhāo = self study
 jhāṇam ussaggo vi a = meditation and renouncement
 jhāṇam = meditation, ussaggo = renouncement, vi a = and

झाणं उ ध्यान, उस्सग्गो उ उत्सर्ग, वि अ उ और
 अब्भितरओ तवो होइ उ अभ्यंतर तप है
 अब्भितरओ उ अभ्यंतर
 ८.अणिगूहिअ-बल-वीरिओ उ बल इश्वारीरिक शक्ति और वीर्य
 इआत्मबलट को न छिपाते हुए
 अणिगूहिअ उ न छिपाते हुए, बल उ बल, वीरिओ उ वीर्य
 परक्कमइ जो जहुत्तं उ यथोक्त इश्वार में कहे अनुसार उपर्युक्त विषय
 मेंट पराक्रम इविशेष प्रयत्न करना
 परक्कमइ उ पराक्रम करना, जो जहुत्तं उ यथोक्त
 आउत्तो जुंजइ अ जहाथामं उ और पालन में यथा योग्य शक्ति
 जोड़ना
 आउत्तो उ पालन में, जुंजइ उ जोड़ना, जहा उ यथा योग्य, थामं
 उ शक्ति
 नायव्वो वीरियायारो उ वीर्याचार जानने योग्य है
 वीरियायारो उ वीर्याचार
 गाथार्थ :-
 ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य संबंधी आचारण आचार है. इस तरह

abbhintarao tavo hoi = are internal forms of penance
 abbhintarao = internal forms
 8.aṇigūhia-bala-vīrio = without concealing strength and virility

 aṇigūhia = without concealing, bala = strength, vīrio = virility
 parakkamai jo jahuttam = to enterprise as said [in the afore said subjects according to the scriptures]
 parakkamai = to enterprise, jo jahuttam = as said
 āutto juñjai a jahāthāmam = and to join in observing according to the best of ability
 āutto = in observing, juñjai = to join, jahā = according to the best, thāmam = of ability
 nāyavvo vīriyāyāro = vīryācāra is worth knowing
 vīriyāyāro = vīryācāra
 Stanzaic meaning :-
 Practice of jñāna, darśana, cāritra, tapa and vīrya is ācāra. In this way this [ācāra] is said to be of five types. 1.

यह **इआचारट** पाँच प्रकार का कहा गया है. १.
 काल, विनय, बहुमान, **उपधान**, **अनिह्नवता**, व्यंजन, अर्थ और इन दोनों
 संबंधित— आठ प्रकार का **ज्ञानाचार** है. २.
 निःशंकता, निष्कांक्षता, निर्विचिकित्सा, अमूढ दृष्टि, प्रशंसा, स्थिरीकरण,
 वात्सल्य और प्रभावना— आठ प्रकार का **इद्रर्शनाचारट** है. ३.
 चित्त की समाधि पूर्वक पाँच **समिति** और तीन **गुप्तियों** इक्रा पालनट— यह
 आठ प्रकार का **चारित्राचार** जानने योग्य है. ४.
 बारहों प्रकार का अभ्यंतर और बाह्य तप **जिनेश्वरों** द्वारा कथित है. ग्लानि
 रहित और आजीविका के हेतु रहित वह **तपाचार** जानने
 योग्य है. ५.
 उपवास, ऊनोदरता, वृत्ति संक्षेप, रस त्याग, काय क्लेश और संकोचन
 बाह्य तप है. ६.
 प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और उत्सर्ग अभ्यंतर तप है.
 ७.
 बल और वीर्य को न छिपाते हुए यथोक्त पराक्रम करना और पालन करने
 में यथाशक्ति **इअपनी** आत्मा कोट जोड़ना— यह **वीर्याचार** जानने योग्य
 है. ८.

jñānācāra is of eight types— about proper time, proper respect, reverence,
upadhāna, **anihnavaṭā**, consonant, meaning and both of these. 2.
[darśanācāra] is of eight types-- unsuspectingness, undesirous, undelusive-
 ness and uninfatuated view, admiration, steadiness, affection and influence. 3.
 [Observation of] five **samitis** and three **guptis** with peacefulness of mind-- this
cāritrācāra of eight types is worth knowing. 4.

All the twelve types of internal and external penance is said by the **jineśvaras**.
 That **tapācāra** without regret and without the aim of livelihood is worth knowing.
 5.

Fast, eating less, taking less varieties of food, giving up of tastefulness, physical
 sufferings and contraction are external forms of penance. 6.
 Repentance, politeness, service, self study, meditation and renouncement are
 internal forms of penance. 7.
 To enterprise as said without concealing the strength and virility and to join [his
 own soul] in observing according to the best of ability-- this **vīryācāra** is worth
 knowing. 8.

विशेषार्थ :-

ज्ञान / सम्यग् ज्ञान उ मोक्ष मार्ग और मोक्ष के साधनों का बोध कराने वाला **द्वादशांगी** आदि रूप श्रुत ज्ञान;

दर्शन / सम्यग् दर्शन उ तत्त्वभूत पदार्थों में यथार्थ श्रद्धा.

चारित्र / सम्यक् चारित्र उ सर्व विरति चारित्र और देश विरति चारित्र.

सर्व विरति चारित्र उ सावद्य योग इक्रियाओं से संपूर्ण निवृत्ति वाला आचरण.

देश विरति चारित्र उ सावद्य योग इक्रियाओं से आंशिक निवृत्ति वाला आचरण.

तप उ शरीर के रस आदि धातु और **कर्मों** का शोषण करने वाला आचरण.

ज्ञान के आठ आचार :-

१. **काल-** नियत समय में **श्रुत ज्ञान** का अभ्यास करना व कराना.
२. **विनय-** गुरु, **ज्ञान, ज्ञानी, ज्ञान** के उपकरण और ज्ञानाभ्यासी का आदर करते हुए यथा योग्य भक्ति करना.
३. **बहुमान-** गुरु आदि के प्रति बहुमान इहार्दिक प्रीति रखना.

Specific meaning :-

jñāna / samyag jñāna [right knowledge] = Scriptural knowledge in the form of **dvādaśāṅgī** [twelve **aṅgas**] etc. comprehending the path of salvation and the means of salvation.

darśana / samyag darśana [right faith] = Proper faith in fundamental matters.

cāritra / samyak cāritra [right conduct] = **sarva virati cāritra** and **deśa virati cāritra**.

sarva virati cāritra = Conduct with complete retirement of from sinful activities.

deśa virati cāritra = Conduct with partial retirement from sinful activities.

tapa [penance] = Conduct fading the substances of the body like semen and karmas.

Eight conducts of jñāna :-

1. **kāla-** To study or to teach the **śruta jñāna** during prescribed time.
2. **vinaya [respect]-** To adore properly respecting the preceptor, **jñāna** [knowledge], **jñānī** [learned person], sources of **jñāna** and the learner.
3. **bahumāna [reverence]-** To have respect [heartily affection] towards the

४. उपधान- विधि पूर्वक उपधान इशास्त्र निर्दिष्ट तप के साथ क्रियाट कर शास्त्र और सूत्रों का अभ्यास करना.
 ५. अनिहनवता- सिद्धांत या गुरु आदि के विरुद्ध न बोलना.
 ६. व्यंजन- सूत्र या अक्षरों का उच्चारण शुद्ध करना.
 ७. अर्थ- सूत्र या शब्दों का अर्थ शुद्ध करना.
 ८. तदुभय इदोनोट- सूत्र का उच्चार और अर्थ- दोनों शुद्ध करना.

दर्शनाचार के आठ आचार :-

१. निःशंकता- जिन वचन या सिद्धांत में शंका न करना.
 २. निष्कांक्षता- जिन वचन और जिन मत के सिवाय अन्य इमिथ्यात्वट वचन या मत की कांक्षा इच्छा न करना.
 ३. निर्विकित्सा- जैन दर्शन के फल में संदेह कर विचलित न होना इमति विभ्रम न होनाट या साधु-साध्वियों के मलिन वस्त्र आदि देख घृणा न करना.
 ४. अमूढ दृष्टि इमूढ दृष्टि वाला न होनाट- चमत्कारादि देख विचलित न होना.
 ५. प्रशंसा- गुणवान और साधर्मि के गुणों की प्रशंसा करना.

guru etc.

4. upadhāna- To study the scriptures and sūtras performing upadhāna [rites along with penance as specified in the scriptures].
 5. anihnavaṭā- Not to speak ill of the preceptor or doctrines.
 6. vyañjana [consonant]- To pronounce the sūtras or letters correctly.
 7. artha [meaning]- To do correct meaning of the sūtras or the words.
 8. tadubhaya [both]- To do both the pronunciation and meaning of sūtras correctly.

Eight conducts of darśanācāra :-

1. niḥśaṅkatā [unsuspiciousness]- Not to suspect the words of jina or the doctrines.
 2. niṣkāṅkṣatā [undesirous]- Not to desire other [false] words or doctrines other than the words of jina and the doctrine of jina.
 3. nirvikitsā [undelusiveness]- Not to become unsteady [not to be confused] by doubting in the fruits of jaina philosophy or not to feel dislike on seeing uncleaned cloths, wooden utensils etc. of sādhu-sādhvīs.
 4. amūḍha dṛṣṭi [uninfatuated view]- Not to become unsteady seeing miracles.

<p>६. स्थिरीकरण- धर्म मार्ग से विचलित होते हुए को स्थिर करना.</p> <p>७. वात्सल्य- साधर्मिकों के प्रति वात्सल्य भाव रखना.</p> <p>८. प्रभावना- धर्म प्रभावना करना.</p> <p>चारित्र के आठ आचार :- पाँच समिति और तीन गुप्तियों का पालन करना.</p> <p>तप के बारह आचार :-</p> <p>♦ बाह्य तप के छ आचार :-</p> <p>१. अनशन झुपवासट- नियम झुपचवखाणट पूर्वक आहार न लेना.</p> <p>२. ऊणोदरी- भूख की अपेक्षा कुछ कम प्रमाण में आहार करना.</p> <p>३. वृत्ति-संक्षेप- खाने-पीने के पदार्थों की संख्या और प्रमाण को घटाकर सीमित करना.</p> <p>४. रस त्याग- रस झुभक्ष्य विगइट का यथा शक्ति त्याग करना.</p> <p>५. काय-क्लेश- संयम पालन तथा इंद्रिय विकार और कषायों के दमन के लिये शारीरिक कष्ट सहन करना.</p> <p>६. संकोचन- इंद्रिय विकार और कषायों के दमन के लिये शरीर</p>	<p>5. praśansā [admiration]- To praise the virtues of a meritorious person or a co-religionist.</p> <p>6. sthīrīkaraṇa [stabilization]- To make the person firm going astray from the path of religion.</p> <p>7. vātsalya [affection]- To have affectionate feelings towards the co-religionists.</p> <p>8. prabhāvanā [influence]- To glorify the religion.</p> <p>Eight Conducts of cāritra :- To observe five samitis and three guptis.</p> <p>Twelve Conducts of tapa :-</p> <p>♦ Six Conducts of bāhya tapa [external penance] :-</p> <p>1. anaśana [fast]- Not to take food by vow.</p> <p>2. ūṇodarī- To eat a little less than the hunger.</p> <p>3. vṛtti-saṅkṣepa- To limit eatables and drinks by reducing the number and quantity of items.</p> <p>4. rasa tyāga- To give up the tasteful items [bhakṣya vigai] according to the capacity.</p> <p>5. kāya-kleśa [physical sufferings]- To undergo physical hardships for self control and for suppression of sensual deterioration and kaṣāyas.</p>
--	---

<p>इअंगोपांगट को संकोच कर रखना.</p> <p>♦ अभ्यंतर तप के छ आचार :-</p> <p>१. प्रायश्चित्त- दोषों की शुद्धि के लिये शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त लेना.</p> <p>२. विनय- कर्म क्षय के लिये मोक्ष साधनों की यथाविधि आराधना करना.</p> <p>३. वैयवृत्त्य- पूज्य भाव से संघ की सेवा करना.</p> <p>४. स्वाध्याय- स्व आत्मा का अध्ययन / आत्म हितकारी शास्त्रों का अध्ययन करना.</p> <p>५. ध्यान- चित्त को एकाग्र कर शुभ ध्यान करना.</p> <p>६. उत्सर्ग- लोक समूह, शरीर, उपधि, आहार और पानी का त्याग इन्द्रव्य उत्सर्गट तथा कषाय, संसार और कर्म का त्याग इभाव उत्सर्गट</p> <p>भक्ष्य विगइ :- विगइ जो आहार में ले सकते है / दूध, दही, घी, तेल, गुड / मिठाइ और तली हुई वस्तुएँ.</p> <p>वीर्य के तीन आचार :-</p> <p>मन, वचन और काया की शक्ति को छुपाये बिना ज्ञान, दर्शन, चारित्र और</p>	<p>6. saṅkocana [contraction]- To keep the body contracted for suppressing the sensual deterioration and kaṣāyas.</p> <p>♦ Six conducts of abhyantara tapa [internal penance] :-</p> <p>1. prāyaścitta- To take repentance according to scriptures for the rectification of faults.</p> <p>2. vinaya- To pursue the means of salvation properly for the destruction of karmas.</p> <p>3. vaiyāvṛtṭya- To serve society [four-folded religious congregation] with dedication.</p> <p>4. svādhyāya- Study of self / to study the literature beneficial to the soul.</p> <p>5. dhyāna- To practise auspicious meditation concentrating the mind.</p> <p>6. utsarga- Avoidance of public gatherings, body, material things, food and water [physical abandonment] and giving up of kaṣāyas, world and karmas [psychological renouncement].</p> <p>bhakṣya vigai :- vigai which can be used while eating / milk, curd, butter, oil, jaggery / sweets and fired items.</p>
---	--

तप संबंधी आचार के पालन में पुरुषार्थ करना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र में श्रावक के आचार के पांच मुख्य भेदों एवं उनके प्रभेदों का वर्णन है.

Three Conducts of vīrya :- To make efforts in observing the code of conduct relating to **jñāna**, **darśana**, **cāritra** and **tapa** without hiding mental, vocal and physical capability.

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra**, there is a description of five main divisions and their sub-divisions of conducts of the **śrāvaka**.

२९. सुगुरु वन्दना सूत्र

इच्छामि खमा-समणो! वंदितं जावणिज्जाए, निसीहिआए,
 अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो-कायं काय-संफासं-
 खमणिज्जो भे! किलामो? अप्प-किलंताणं बहु-सुभेण भे!
 दिवसो वड्ढकंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे?
 खामेमि खमा-समणो! देवसिअं वड्ढकमं, आवस्सिआए
 पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए
 तित्तीसन्न यराए जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए,
 वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए,
 मायाए, लोभाए, सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छो-वयाराए,
 सव्व-धम्मा-इक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो
 कओ, तस्स खमा-समणो! पडिक्कमामि, निंदामि,
 गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि..... १.

29. suguru vandanā sūtra

icchāmi khamā-samaṇo! vandīdum jāvaṇijjāe, nisīhiāe,
 aṇujāṇaha me miuggaham, nisīhi, aho-kāyam kāya-
 samphāsam-khamaṇijjo bhe! kilāmo? appa-kilantāṇam bahu-
 subheṇa bhe! divaso vaikkanto? jattā bhe? javaṇijjam ca bhe?
 khāmemi khamā-samaṇo! devasiam vaikkamam, āvassīāe
 paḍikkamāmi, khamāsamaṇāṇam, devasiāe āsāyaṇāe
 tittīsanna yarāe jam kiñci micchāe, maṇa-dukkadāe,
 vaya-dukkadāe, kāya-dukkadāe, kohāe, māṇāe,
 māyāe, lobhāe, savva-kālīāe, savva-miccho-vayārāe,
 savva-dhammā-ikkamaṇāe āsāyaṇāe jo me aiyāro kao,
 tassa khamā-samaṇo! paḍikkamāmi, nindāmi, garihāmi,
 appāṇam vosirāmi..... 1.

शब्दार्थ :-

इच्छामि उ मैं चाहता हूँ

खमा-समणो! उ हे क्षमाश्रमण !

वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए उ इअन्य प्रवृत्ति / व्यापारट त्याग कर शक्ति अनुसार वंदन करना

वंदिउं उ वंदन करना, जावणिज्जाए उ शक्ति के अनुसार, निसीहिआए उ त्याग कर

अणुजाणह मे मिउग्गहं उ अवग्रह इमर्यादित भूमि / गुरु के समीपवर्ती भूमि में प्रवेश करने के लिये मुझे आज्ञा प्रदान करो

अणुजाणह उ आज्ञा प्रदान करो, मे उ मुझे, मिउग्गहं उ अवग्रह में प्रवेश करने के लिये

निसीहि उ अशुभ व्यापार को त्याग करके

अहो-कायं काय-संफासं उ इआपकेट अधो शरीर इशरीर का नीचला भाग / चरणोंट को मेरे शरीर इहाथट द्वारा स्पर्श करने से अहो उ अधो, कायं उ शरीर, काय उ मेरे शरीर द्वारा, संफासं उ स्पर्श करने से

खमणिज्जो भे! किलामो उ हुए खेद के लिये आप क्षमा करें

खमणिज्जो उ क्षमा करें, भे उ आप, किलामो उ हुए खेद के

Literal meaning :-

icchāmi = i wish

khamā-samaṇo! = oh! kṣamāśramaṇa!

vaṇḍium jāvaṇijjāe nisīhiāe = to obeisance according to the best of my ability giving up [all other activities]

vaṇḍium = to obeisance, jāvaṇijjāe = according to the best of my ability, nisīhiāe = giving up

aṇujāṇaha me miuggaham = kindly allow me to enter the avagraha [restricted area / area near by to the guru]

aṇujāṇaha = kindly allow, me = me, miuggaham = to enter the avagraha

nisīhi = giving up all evil activities

aho-kāyam kāya-samphāsam = by touching your lower part of the body [feet] with my body [hands]

aho = lower part, kāyam = of the body, kāya = with my body, samphāsam = by touching

khamañijjo bhe! kilāmo = you forgive for the discomfort caused

khamañijjo = forgive, bhe = you, kilāmo = for the discomfort caused

लिये
 अप्प-किलंताणं बहु-सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो ? उ आपका दिन
 अल्प ग्लानि और अधिक सुख पूर्वक व्यतीत हुआ है ?
 अप्प उ अल्प, किलंताणं उ ग्लानि, बहु उ अधिक, सुभेण उ सुख
 पूर्वक, भे उ आपका, दिवसो उ दिन, वइक्कंतो उ व्यतीत हुआ
 है?
 जत्ता भे ? उ आपकी इत्थंयमट यात्रा इत्थीक चल रही हैट ?
 जत्ता उ यात्रा, भे उ आपकी
 जवणिज्जं च भे ? उ और आपका इत्थन एवं इन्द्रियोंट उपघात
 इत्थीड़ाट रहित हैं ?
 जवणिज्जं उ उपघात रहित हैं?, च उ और
 खामेमि खमा-समणो! देवसिअं वइक्कमं उ हे क्षमाश्रमण! दिन में हुए
 व्यतिक्रम इअपराधोंट की मैं क्षमा मांगता हूँ
 खामेमि उ मैं क्षमा मांगता हूँ, देवसिअं उ दिन में हुए, वइक्कमं
 उ व्यतिक्रम की
 आवस्सिआए उ आवश्यक क्रिया के लिये इत्थें अवग्रह से बाहर जाता
 हूँट
 पडिक्कमामि उ मैं प्रतिक्रमण करता हूँ

appa-kilantāṇam bahu-subheṇa bhe! divaso vaikkanto? = has your day
 passed with little affliction and more comfort?

appa = little, **kilantāṇam** = affliction, **bahu** = more, **subheṇa** = with
 comfort, **bhe** = your, **divaso** = day, **vaikkanto** = has passed

jattā bhe? = [Is] your journey [of self-control going on well]

jattā = journey

javaṇijjam ca bhe? = and is your [mind and sense organs] without affliction?

javaṇijjam = are without affliction, **ca** = and

khāmemi khamā-samaṇo! devasiam vaikkamam = oh **kṣamāśramaṇa!** i beg
 forgiveness for the mistakes committed during the day

khāmemi = i beg forgiveness, **devasiam** = committed during the day,

vaikkamam = for the mistakes

āvassiāe = [i go out of the **avagraha**] for necessary rites

paḍikkamāmi = i perform the **pratikramaṇa**

खमासमणाणं देवसिआए उ दिन में क्षमाश्रमण के प्रति
 खमासमणाणं उ क्षमाश्रमण के प्रति, देवसिआए उ दिन में
 आसायणाए तित्तीसन्नयराए उ तैंतीस में से अन्य जो कोई भी
 आशातना की हो
 आसायणाए उ आशातना की हो, तित्तीस उ तैंतीस में से,
 अन्नयराए उ अन्य जो कोई भी
 जं किंचि उ जो कोई
 जं उ जो, किंचि उ कोई
 मिच्छाए उ मिथ्या भाव द्वारा
 मण-दुक्कडाए उ मन के दुष्कृत्यों द्वारा
 मण उ मन के, दुक्कडाए उ दुष्कृत्यों द्वारा
 वय-दुक्कडाए उ वचन के दुष्कृत्यों द्वारा
 वय उ वचन के
 काय-दुक्कडाए उ काया के दुष्कृत्यों द्वारा
 काय उ काया के
 कोहाए माणाए मायाए लोभाए उ क्रोध से, मान से, माया से या लोभ
 से
 कोहाए उ क्रोध से, माणाए उ मान से, मायाए उ माया से,

khamāsamaṇāṇaṃ devasiāe = in the day towards kṣamāśramaṇa
 khamāsamaṇāṇaṃ = towards kṣamāśramaṇa, devasiāe = in the day
 āsāyaṇāe tittisannayarāe = any of the other irreverence that might have
 done out of thirty three
 āsāyaṇāe = irreverences that might have done, tittisa = out of thirty
 three, annayarāe = any of the other
 jaṃ kiñci = any of
 jaṃ = any, kiñci = of
 micchāe = by wrong feelings / delusion
 maṇa-dukkadāe = by mental misdeeds / evil thinking
 maṇa = by mental, dukkadāe = misdeeds
 vāya-dukkadāe = by vocal misdeeds / evil speaking
 vāya = by vocal
 kāya-dukkadāe = by physical misdeeds / evil deeds
 kāya = by physical
 kohāe māṇāe māyāe lobhāe = by anger, by pride, by deceit or by
 greediness
 kohāe = by anger, māṇāe = by pride, māyāe = by deceit, lobhāe = by

<p>लोभाए उ लोभ से सव्व-कालियाए उ सर्व काल संबंधी सव्व उ सर्व, कालियाए उ काल संबंधी सव्व-मिच्छो-वयाराए उ सर्व प्रकार के मिथ्या उपचारों से सव्व उ सर्व प्रकार के, मिच्छ उ मिथ्या, उवयाराए उ उपचारों से सव्व-धम्मा-इक्कमणाए उ सर्व प्रकार के धर्म इकरने योग्य प्रवृत्तियों के अतिक्रमण से धम्म उ धर्म के, अइक्कमणाए उ अतिक्रमण से आसायणाए उ हुए आशातना द्वारा जो मे अइयारो कओ उ मुझसे जो अतिचार हुआ हो जो उ जो, मे उ मुझसे, अइयारो उ अतिचार, कओ उ हुआ हो</p> <p>तस्स उ उनका खमासमणो! उ हे क्षमाश्रमण! पडिक्कमामि उ मैं प्रतिक्रमण करता हूँ निंदामि उ मैं निंदा करता हूँ गरिहामि उ मैं गर्हा करता हूँ अप्पाणं वोसिरामि उ अशुभ प्रवृत्तियों वालीट आत्मा का मैं त्याग</p>	<p>greediness savva-kāliyāe = regarding all the periods / past, present and future savva = all, kāliyāe = regarding the periods savva-miccho-vayārāe = by all types of false practices savva = by all types, micchā = false, uvayārāe = practices</p> <p>savva-dhammā-ikkamaṇāe = by all types of violations of duties [activities worth performing] dhamma = of duties, aikkamaṇāe = by violations āsāyaṇāe = through irreverence committed jo me aiyāro kao = any violation committed by me jo = any, me = by me, aiyāro = violation, kao = committed</p> <p>tassa = of them khamāsamaṇo! = oh kṣamāśramaṇa! paḍikkamāmi = i perform the pratikramaṇa nindāmi = i censure garihāmi = i condemn</p>
--	--

करता हूँ

अप्पाणं उ आत्मा का, वोसिरामि उ त्याग करता

गाथार्थ :-

हे क्षमाश्रमण! इअन्य व्यापारट त्याग कर शक्ति के अनुसार मैं वंदन करना चाहता हूँ. मुझे अवग्रह में प्रवेश करने के लिये आज्ञा प्रदान करो. अशुभ व्यापार को त्याग करके, आपके चरणों को मेरी काया झमेरे हाथट द्वारा स्पर्श करने से हुए खेद के लिए आप क्षमा करें. आपका दिन अल्प ग्लानि और अधिक सुख पूर्वक व्यतीत हुआ है ? आपकी इत्थंयमट यात्रा झ्ठीक चल रही हैट ? आपका मन और इन्द्रियाँ पीड़ा रहित है ? हे क्षमाश्रमण! दिन में हुए अपराधों की मैं क्षमा मांगता हूँ. आवश्यक क्रिया के लिये झ्में अवग्रह में से बाहर जाता हूँट. दिन में क्षमाश्रमण के प्रति तैंतीस में से अन्य जो कोई भी आशातना कि हो झ्उसकाट मैं प्रतिक्रमण करता हूँ. जो कोई मिथ्या भाव द्वारा, मन, वचन या काया के दुष्कृत्य द्वारा; क्रोध, मान, माया या लोभ से; सर्व काल में, सर्व प्रकार के मिथ्या उपचारों से या सर्व प्रकार के धर्म अतिक्रमण से हुए आशातना द्वारा मुझसे जो कोई अतिचार हुआ हो, हे क्षमाश्रमण! उनका मैं प्रतिक्रमण करता हूँ, निंदा करता हूँ, गर्हा करता हूँ एवं इअशुभ प्रवृत्तियों वालीट आत्मा का त्याग करता हूँ. . १.

appāṇam vosirāmi = i renounce the soul [engaged in evil activities]

appāṇam = the soul, vosirāmi = i renounce

Stanzaic meaning :-

Oh **kṣamāśramaṇa!** I wish to obeisance according to the best of my ability giving up [all other activities]. Kindly allow me to enter the restricted area. You forgive for the discomfort caused by touching your feet with my body [hands], giving up all evil activities. Has your day passed with little affliction and more comfort? [Is] your journey [of self-control going on well]? Is your mind and sense organs without affliction? Oh **kṣamāśramaṇa!** I beg forgiveness for the mistakes committed during the day. [I go out of the **avagraha**] for necessary rites. Any of the other irreverence that might have done out of thirty three in the day towards **kṣamāśramaṇa** [for that] I perform **pratikramaṇa**. Any violation committed by me through irreverence committed by delusion, by evil thinking, by evil speaking, by evil deeds, by anger, by pride, by deceit, by greediness, regarding all the periods, by all types of false practices or by all types of violations of duties, oh **kṣamāśramaṇa!** I perform **pratikramaṇa**, I censure, I condemn of them and I

विशेषार्थ :-**वंदन के बत्तीस दोष :-**

१. अनादर से, २. अभिमान से, ३. द्वेष से, ४. भय से, ५. क्रोध से, ६. जल्दी से, ७. कूदकर, ८. अनिच्छा से, ९. आगे-पीछे हिलते हुए, १०. घूमते हुए, ११. दूसरों से वंदन कराने की इच्छा से, १२. मैत्री की इच्छा से, १३. होशियारी बताने के लिये, १४. स्वार्थ के लिये, १५. छुपकर, १६. ठपके से, १७. खुश करने के लिये, १८. निंदा करते हुए, १९. दूसरी बातें करते हुए, २०. लोक निंदा से बचने के लिये, २१. दूसरे के देखने पर, २२. अक्षर कम बोलते हुए, २३. वंदन सूत्र का अस्पष्ट उच्चार करते हुए, २४. वंदन सूत्र मन में बोलते हुए, २५. वंदन सूत्र जोर से बोलते हुए, २६. वंदन करने के बाद जोर से 'मत्थएण वंदामि' कहते हुए, २७. हाथों को घुमाकर सबको एक साथ, २८. आवर्त्त के समय हाथ द्वारा मस्तक को ठीक से स्पर्श न करते हुए, २९. रजोहरण को ठीक से स्पर्श न करते हुए, ३०. दोनों हाथों को घुटनों के बहार रखकर, ३१. अयोग्य समय पर और ३२. तीर्थकर की आज्ञा को कर मानकर वंदन करना.

गुरु के प्रति तैंतीस आशातनाएं :-

१. अकारण गुरु के आगे चलना,

renounce the soul [engaged in evil activities]. 1.

Specific meaning :-**Thirty two faults of vandanā :-**

To obeisance 1. with discourtesy, 2. with pride, 3. with malice, 4. out of fear, 5. with anger, 6. in a hurry, 7. by jumping, 8. unwillingly, 9. by moving forward and backward, 10. moving here and there, 11. with the desire of getting obeisanced from others, 12. with the desire of friendly relations, 13. to display cleverness, 14. with selfishness, 15. by hiding himself, 16. scolding others, 17. to please, 18. speaking ill of others, 19. talking on other subjects, 20. to escape public criticism, 21. if observed by others, 22. uttering less words, 23. without pronouncing the **vandanā sūtra** clearly, 24. humming **vandanā sūtra**, 25. uttering the **vandanā sūtra** too loudly, 26. by uttering '**matthaena vandāmi**' loudly after obeisancing, 27. all simultaneously by rotating folded hands in all directions, 28. without touching the head properly by hands while performing the **āvartta**, 29. without touching the **rajoharaṇa** properly, 30. by keeping two hands outside the knees, 31. at improper time, and 32.

२. अकारण गुरु के साथ साथ चलना,
 ३. अकारण गुरु के पीछे नजदीक चलना,
 ४. अकारण गुरु के आगे खड़ा रहना,
 ५. अकारण गुरु के साथ साथ खड़ा रहना,
 ६. अकारण गुरु के पीछे नजदीक खड़ा रहना,
 ७. अकारण गुरु के आगे बैठना,
 ८. अकारण गुरु के साथ साथ बैठना,
 ९. अकारण गुरु के पीछे नजदीक बैठना,
 १०. स्थंडिल भूमि साथ में जाने के बाद गुरु से पहले लौटना,
 ११. बाहर से एक साथ आने के बाद गुरु से पहले इरियावहियं करना,
 १२. गोचरी इआहारट लाते समय लगे दोषों की आलोचना दूसरे के पास करके फिर गुरु के पास करना,
 १३. गोचरी दूसरे को दिखाकर फिर गुरु को दिखाना,
 १४. गोचरी करने के लिये दूसरों को निमंत्रण देकर फिर गुरु को निमंत्रण देना,
 १५. गुरु आज्ञा के बिना दूसरों को गोचरी देना,

thinking the order of **tīrthaṅkara** as a tax / burden.

Thirty three irreverence towards the guru :-

1. To walk in front of the **guru** without any reason,
2. To walk by the side of the **guru** without any reason,
3. To walk behind the **guru** keeping too nearer without any reason,
4. To stand in front of the **guru** without any reason,
5. To stand by the side of the **guru** without any reason,
6. To stand too nearer behind the **guru** without any reason,
7. To sit in front of the **guru** without any reason,
8. To sit by the side of the **guru** without any reason,
9. To sit too nearer behind the **guru** without any reason,
10. To return back before the **guru** on going together to **sthaṇḍila bhūmi** [place of excretion],
11. To perform **iriyāvahiyam** prior to the **guru** on coming together from outside,
12. To criticize the faults committed while bringing the **gocarī** [food] before others prior to that before **guru**,
13. To show **gocarī** to the **guru** after showing to others,

<p>१६. साधारण गोचरी गुरु को देकर स्वयं अच्छी गोचरी लेना,</p> <p>१७. दिन में गुरु द्वारा पूछने या बुलाने पर जवाब न देना,</p> <p>१८. रात में गुरु द्वारा जगाने पर, बुलाने पर या कुछ पूछने पर जवाब न देना,</p> <p>१९. गुरु द्वारा बुलाने पर या कुछ पूछने पर आसन पर बैठे बैठे ही या संथारे में सोते सोते ही जवाब देना,</p> <p>२०. गुरु द्वारा बुलाने पर अविनय से जवाब देना,</p> <p>२१. गुरु को अबहुमान पूर्वक बुलाना,</p> <p>२२. गुरु का बताया हुआ काम न करना,</p> <p>२३. ऊंचे और कर्कश स्वर में गुरु को वंदन करना,</p> <p>२४. कोई आने पर गुरु द्वारा बातचीत करने से पहले स्वयं ही बातचीत कर लेना,</p> <p>२५. गुरु द्वारा बात करते समय या उपदेश देते समय होंशियारी बताने के लिये बीच में बोलना,</p> <p>२६. गुरु द्वारा धर्मकथा आदि कहते रहने पर बीच में बोलकर भंग करना,</p> <p>२७. गुरु के बात करते समय उनकी बातों को तोड़ना,</p> <p>२८. गुरु को उपदेश देना,</p>	<p>14. To invite the guru after inviting others to take gocarī,</p> <p>15. To give gocarī to others without permission of the guru,</p> <p>16. To take best [items of] gocarī for himself giving ordinary [items of] gocarī to the guru,</p> <p>17. Not to reply when asked something or called by the guru during day time,</p> <p>18. Not to reply when awakened, asked something or called by the guru during night,</p> <p>19. To reply keeping seated on āsana [seat] or lying down on santhārā [woollen mat] itself on being called or asked something by the guru,</p> <p>20. To reply immodestly on being called by the guru,</p> <p>21. To address the guru without proper respect,</p> <p>22. Not to do the work shown by the guru,</p> <p>23. To perform obeisance to the guru in a loud and harsh tone,</p> <p>24. To talk himself, first prior to talking by the guru on arrival of somebody,</p> <p>25. To speak in middle to show cleverness while conversation or delivery of discourses by the guru,</p>
--	---

२९. गुरु के वचनों की प्रशंसा न करना,
 ३०. स्वयं विशेष रूप से धर्म कथादि कहना,
 ३१. गुरु के सामने ऊँचे या समान आसन पर बैठना,
 ३२. गुरु के आसन को पाँव लगाना या भूल से लगने पर क्षमा न मांगना,
 ३३. गुरु के आसन या संधारे पर बैठना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से सद्गुरुओं को दो बार वंदन करके, उनके प्रति लगे दोषों के लिये क्षमा मांगी जाती है. इन्द्रूसरी बार वंदन करते समय आवस्सियाए पद नहीं बोलना चाहिये.ट

26. To interrupt by speaking in middle while religious stories etc. is being told by the **guru**,
 27. To interrupt talks while the **guru** is talking,
 28. To preach to the **guru**,
 29. Not to praise words of the **guru**,
 30. To tell religious stories etc. specifically by himself,
 31. To sit on higher or equivalent **āsana** before the **guru**,
 32. To touch the **āsana** of **guru** with leg or not to beg pardon on touching with leg my mistake,
 33. To sit on the **āsana** or **santhārā** of the **guru**.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, saluting the worthy preceptors twice, pardon is being asked for the faults committed against him. [While saluting for the second time, the phrase **āvassiyāe** should not be uttered.]

३०. देवसिअं आलोउं? सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं?
 इच्छं, आलोएमि. जो मे देवसिओ अइयारो कओ,
 काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो,
 अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,
 अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,
 नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते, सुए, सामाइए,
 तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,
 पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं,
 चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स,
 जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. . . १.

शब्दार्थ :-

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उ हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान
 कीजिए

30. devasiam ālou? sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! devasiam ālou?
 iccham, āloemi. jo me devasio aiyāro kao,
 kāio, vāio, māṇasio, ussutto, ummaggo,
 akappo, akaraṇijjo, dujjhāo, duvvicintio,
 aṇāyāro, aṇicchāvvo, asāvaga-pāuggo,
 nāṇe, daṇsaṇe, carittā-caritte, sue, sāmāie,
 tiṇham guttiṇam, caṇham kasāyāṇam,
 pañcaṇha-maṇuvvayāṇam, tiṇham guṇa-vvayāṇam,
 caṇham sikkhā-vayāṇam, bārasa-vihassa sāvaga-
 dhammassa, jam khaṇḍiam jam virāhiam, tassa micchā mi
 dukkaḍam. 1.

Literal meaning :-

icchākāreṇa sandisaha bhagavan! = Oh bhagavān! voluntarily give me the

इच्छाकारेण उ स्वेच्छा से, संदिसह उ आज्ञा प्रदान कीजिए,
 भगवन् उ हे भगवान्
 देवसिअं आलोउं? उ दिवस संबंधी इदिवस में किये अपराधों कीट
 आलोचना करुं?
 देवसिअं उ दिवस संबंधी, आलोउं उ अलोचना करुं
 इच्छं उ मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ
 आलोएमि उ मैं आलोचना करता हूँ
 जो मे देवसिओ अइयारो कओ उ मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार
 हुआ हो
 काइओ वाइओ माणसिओ उ काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा
 उस्सुत्तो उ उत्सूत्र इस्सूत्र के विरुद्ध कहने से
 उम्मगो उ उन्मार्ग में इम्मार्ग के विरुद्ध चलने से
 अकप्पो उ अकल्पनीय इआचार के विरुद्ध वर्तन करने से
 अकरणिज्जो उ अकरणीय इअयोग्य कार्य करने से
 दुज्झाओ उ दुष्ट ध्यान इआर्त्त या रौद्र ध्यान करने से
 दुव्विचिंतिओ उ दुष्ट चिंतन करने से
 अणायारो उ अनाचार इअ आचरण योग्य आचरण करने से
 अणिच्छिअवो उ अनिच्छित इअन से न चाहने योग्य वर्तन करने से

permission

icchākāreṇa = voluntarily, sandisaha = give me the permission, bhagavan = Oh bhagavān!

devasiam ālou? = shall i censure [the faults] of the day? [committed during the day]

devasiam = of the day, ālou = shall i censure

iccham = i am obeying your order

āloemi = i am censuring

jo me devasio aiyāro kao = the violations which are committed by me during the day

kāio vāio māṇasio = by deeds, by words, by thoughts

ussutto = by speaking against the sūtras

ummaggo = by acting in wrong way

akappo = by acting against the prescribed code of conduct

akaraṇijjo = by doing undesirable activities

dujjhāo = by evil concentration [ārtta or raudra dhyāna]

duvvicintio = by ill-thinking

aṇāyāro = by doing improper behaviour

असावग-पाउग्गो उ श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से

नाणे दंसणे उ ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी

चरित्ताचरित्ते उ देश-विरति चारित्र संबंधी

सुए सामाइए उ श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी

तिण्हं गुत्तीणं उ तीन गुप्तियों संबंधी

चउण्हं कसायाणं उ चार कषाय संबंधी

पंचण्ह-मणु-व्वयाणं उ पांच अणु व्रत में

तिण्हं गुण-व्वयाणं उ तीन गुण व्रत में

चउण्हं सिक्खा-वयाणं उ चार शिक्षा व्रत में

बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स उ बारह प्रकार के इन्द्रत रूपीट श्रावक धर्म में

जं खंडिअं जं विराहिअं उ जो खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों

इद्रेखें सूत्र नं. २७८

anīcchiavvo = by doing acts undesirable [by the heart]

asāvaga-pāuggo = by acting against the code of conduct fit for a śrāvaka

nāṇe dansaṇe = regarding jñāna, regarding darśana

carittācaritte = about deśa-virati cāritra

sue sāmāie = about śruta jñāna, about sāmāyika

tiṇhaṃ guttiṇaṃ = about three guptis

cauṇhaṃ kasāyāṇaṃ = about four kaṣāyas

pañcaṇha-maṇu-vvayāṇaṃ = in five small [partially observed] vows

tiṇhaṃ guṇa-vvayāṇaṃ = in three characteristic vows

cauṇhaṃ sikkhā-vayāṇaṃ = in four moral [educational] vows

bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa = in twelve types [of vows] of śrāvaka's dharma [code of conduct]

jaṃ khaṇḍiaṃ jaṃ virāhiaṃ = violations which are committed, faults which are committed

tassa micchā mi dukkaḍaṃ = those misdeeds of mine may become fruitless [Refer sūtra no. 27]

गाथार्थ :-

हे **भगवान्!** स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो. दिवस संबंधी इन्द्रिवस में किये अपराधों कीट आलोचना करुं? आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं. मैं अलोचना करता हूं. काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा, **उत्सूत्र** कहने से, उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से, अनिच्छित वर्तन करने से, **श्रावक** के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से, **ज्ञान** संबंधी, **दर्शन** संबंधी, **देश-विरति चारित्र** संबंधी, **श्रुत ज्ञान** संबंधी, **सामायिक** संबंधी, तीन **गुप्तियों** संबंधी, चार **कषाय** संबंधी और पांच अणु व्रत में, तीन गुण व्रत में, चार शिक्षा व्रत में— बारह प्रकार के **श्रावक** धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए हों, मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** द्वारा **श्रावक** के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों का संक्षेप में वर्णन कर आलोचना की जाती है.

Stanzaic meaning :-

Oh **bhagavān!** voluntarily give me the permission. Shall i censure [the faults] of the day? [committed during the day]. I am obeying your order. I am censuring. The violations which are committed by me during the day by deeds, by words, by thoughts, by speaking against the **sūtras**, by acting in wrong way, by acting against the prescribed code of conduct, by doing undesirable activities, by evil concentration, by ill-thinking, by doing improper behaviour, by doing acts undesirable, by acting against the code on conduct fit for a **śrāvaka**, regarding **jñāna**, regarding **darśana**, about **deśa-virati cāritra**, about **śruta jñāna**, about **sāmāyika**, about three **guptis**, about four **kaṣāyas** and in five small vows, in three characteristic vows, in four moral vows-- in twelve types of **śrāvakas** code of conduct, violations which are committed, faults which are committed, those misdeeds of mine may become fruitless.

Introduction of the sūtra :-

Describing in brief the violations attached to the conducts and twelve vows of the **śrāvaka**, criticism is being done By this **sūtra**.

३१. सात लाख

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति-काय, चौदह लाख साधारण वनस्पति-काय, दो लाख द्वीन्द्रिय, दो लाख त्रीन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य- इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. १.

शब्दार्थ :-

सात लाख उ सात लाख

सात उ सात, लाख उ लाख

31. sāta lākha

sāta lākha pṛthvīkāya, sāta lākha apkāya, sāta lākha teukāya, sāta lākha vāukāya, dasa lākha pratyeka vanaspati-kāya, caudaha lākha sādharmaṇa vanaspati-kāya, do lākha dvīndriya, do lākha trīndriya, do lākha caurīndriya, cāra lākha devatā, cāra lākha nārakī, cāra lākha tiryāṇca pañcendriya, caudaha lākha manuṣya- isa taraha caurāsī lākha jīva-yoni me se mere jīva ne jo koī jīva-hinsā kī ho, karāyī ho, karate hue kā anumodana kiyā ho, una saba kā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam.....1.

Literal meaning :-

sāta lākha = seven lac

sāta = seven, lākha = lac

पृथ्वीकाय उ पृथ्वी रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 अप्काय उ जल रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 तेउकाय उ अग्नि रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 वाउकाय उ वायु रूप शरीर वाले एक इंद्रिय के जीव
 दस लाख उ दस लाख

दस उ दस

प्रत्येक वनस्पति-काय उ स्वतंत्र शरीर से युक्त वनस्पति रूप एक
 इंद्रिय के जीव
 प्रत्येक उ स्वतंत्र शरीर से युक्त, वनस्पति-काय उ वनस्पति रूप
 जीव

चौदह लाख उ चौदह लाख

चौदह उ चौदह

साधारण-वनस्पति-काय उ अनंत जीवों के बीच एक शरीर से युक्त
 वनस्पति रूप एक इंद्रिय के जीव

साधारण उ अनंत जीवों के बीच एक शरीर से युक्त,

दो लाख उ दो लाख

दो उ दो

pr̥thvīkāya = living beings of one sense organ with earth as its body

apkāya = living beings of one sense organ with water with as its body

teukāya = living beings of one sense organ with fire as its body

vāukāya = living beings of one sense organ with air as its body

dasa lākha = ten lac

dasa = ten

pratyeka vanaspati-kāya = living beings of one of sense organ with
 independent body in the form of vegetation

pratyeka = with independent body, **vanaspati-kāya** = living being in the
 form of vegetation

caudaha lākha = fourteen lac

caudaha = fourteen

sādhāraṇa-vanaspati-kāya = living beings of one sense organ with single
 body for infinite number of living beings in the form of vegetation

sādhāraṇa = single body for infinite number of living beings

do lākha = two lac

do = two

द्वीन्द्रिय उ दो इंद्रिय वाले जीव
 द्वि उ दो, इंद्रिय उ इंद्रिय वाले जीव
 त्रीन्द्रिय उ तीन इंद्रिय वाले जीव
 त्रि उ तीन
 चउरिन्द्रिय उ चार इंद्रिय वाले जीव
 चउर उ चार
 चार लाख उ चार लाख
 चार उ चार
 देवता उ इम्राँच इंद्रिय वाले देव लोक के जीव
 नारकी उ इम्राँच इंद्रिय वाले नारक के जीव
 तिर्यच पंचेन्द्रिय उ इन्द्रेव, मनुष्य और नारक सिवाय के पँच इंद्रिय
 वाले पशु-पक्षी आदि जीव
 तिर्यच उ पशु-पक्षी आदि जीव, पंच उ पांच
 मनुष्य उ मनुष्य
 इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से उ इस तरह चौरासी लाख
 जीव-योनि में से

dvīndriya = living beings with two sense organ
dvi = two, **indriya** = living being with sense organ
trīndriya = living beings with three sense organs
tri = three
caurindriya = living beings with four sense organs
caura = four
cāra lākha = four lac
cāra = four
devatā = heavenly beings [with five sense organs] / gods
nārakī = living beings of the hell [with five sense organs]
tiryañca pañcendriya = non-human beings [living beings like animals, birds]
 with five sense organs [other than gods, human beings and **naraka**]
tiryañca = non-human beings, **pañca** = five
manuṣya = human beings
isa taraha caurāsī lākha jīva-yoni me se = in this way, out of eighty four lac
 form of living beings
isa = in this, **taraha** = way, **caurāsī** = eighty four, **jīva** = living beings, **yoni**

मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो उ मेरे जीव ने जो कोई
जीव-हिंसा की हो

करायी हो उ करायी हो

करते हुए का अनुमोदन किया हो उ करते हुए का अनुमोदन किया
हो

उन सब का उ उन सब का / वे सभी

मन वचन-काया से उ मन-वचन-काया से

मिच्छा उ मिथ्या हों

मि दुक्कडं उ मेरे दुष्कृत्य

= forms of, **me** = out, **se** = of

mere jīva ne jo koī jīva-hinsā kī ho = myself have committed any injury

mere = my, **jīva ne** = self, **jo koi** = any, **jīva-hinsā** = injury, **kī** =
committed, **ho** = have

karāyī ho = have caused others to commit

karāyī = caused others to commit

karate hue kā anumodana kiya ho = have appreciated on being committed
by others

karate hue kā = on being committed by others, **anumodana kiya** =
appreciated

una saba kā = of all those

una = those, **saba** = all, **kā** = of

mana-vacana-kāyā se = by thought, speech and action

mana = thought, **vacana** = speech, **kāyā** = action, **se** = by

micchā = may become fruitless

mi dukkaḍam = misdeeds of mine

मि उ मेरे, दुक्कडं उ दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति-काय, चौदह लाख साधारण वनस्पति-काय, दो लाख द्वीन्द्रिय, दो लाख त्रीन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य- इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सभी मेरे दुष्कृत्य मन-वचन-काया से मिथ्या हों. १.

विशेषार्थ :-

योनि उ जीव को पुनः उत्पन्न करने की शक्ति से संपन्न जीवों के उत्पन्न

mi = of mine, dukkaḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

seven lac forms of living beings with earth as its body, seven lac forms of living beings with water as its body, seven lac forms of living beings with fire as its body, seven lac forms of living beings with air as its body, ten lac forms of living beings with independent body in the form of vegetation, fourteen lac forms of living beings with single body for infinite living beings in the form of vegetation, two lac forms of living beings with two sense organs, two lac forms of living beings with three sense organs, two lac forms of living beings with four sense organs, four lac forms of heavenly beings, four lac forms of living beings of the hell, four lac forms of non-human beings with five sense organs, fourteen lac forms of human beings-- in this way, out of eighty four lac forms of living beings, myself have committed any injury to any living beings, have caused others to commit it, has appreciated on being committed by others, all those misdeeds of mine may become fruitless by thought, words and actions. 1.

Specific meaning :-

yonī = The place where living beings, having the power of giving birth to the living

होने का स्थान.

चौरासी लाख योनि :- वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान इआकारट में समानता वाली प्रत्येक योनि को एक गिनने से चौरासी लाख प्रकार की योनियाँ होती हैं.

पृथ्वीकाय के जीवों की सात लाख योनियाँ :- तीन सौ पचास पृथ्वीकाय जीवों के मूल भेद ३ पाँच प्रकार के वर्ण ३ दो प्रकार की गंध ३ पाँच प्रकार के रस ३ आठ प्रकार के स्पर्श ३ पाँच प्रकार के संस्थान उ सात लाख

विविध प्रकार के जीवों के मूल भेद :- पृथ्वीकाय के तीन सौ पचास, अप्काय के तीन सौ पचास, तेउकाय के तीन सौ पचास, वाउकाय के तीन सौ पचास, प्रत्येक वनस्पतिकाय के पाँच सौ, साधारण वनस्पतिकाय के सात सौ, द्वीन्द्रिय के एक सौ, त्रीन्द्रिय के एक सौ, चउरिन्द्रिय के एक सौ, देवता के दो सौ, नारकी के दो सौ, तिर्यच पंचेन्द्रिय के दो सौ, और मनुष्य के सात सौ मूल भेद हैं.

पाँच प्रकार के वर्ण- श्वेत, लाल, पीला, हरा और काला.

दो प्रकार की गंध- सुगंध और दुर्गंध.

beings again, take birth.

Eighty four lac forms of yonis :- There are eighty four lac forms of **yonis** [a place where living beings takes birth] considering each **yonis** of similar colour, smell, taste, touch and constitution [shape] as one.

Seven lac yonis of living beings with earth as its body :- Three hundred and fifty basic divisions of living beings with earth as its body x five types of colour x two types of smell x five types of taste x eight types of touch x five types of constitution = seven lac.

Basic divisions of various types of living beings :- **pṛthvikāya** have three hundred and fifty, **apkāya** have three hundred and fifty, **teukāya** have three hundred and fifty, **vāukāya** have three hundred and fifty, **pratyeka vanaspatikāya** have five hundred, **sādhāraṇa vanaspatikāya** have seven hundred **dvīndriya** have one hundred, **trīndriya** have one hundred, **caurindriya** have one hundred, **devatā** have two hundred, **nārakī** have two hundred, **tiryañca pañcendriya** have two hundred and **manuṣya** have seven hundred basic divisions.

Five types of colours- white, red, yellow, green and black.

Two types of smell- pleasant smell and unpleasant smell.

Five types of taste- acrid, bitter, astringent, sour [acidic] and sweet.

पाँच प्रकार के रस- तीखा, कड़वा, कषाय, खट्टा और मधुर.

इक्षार / खारे रस का समावेश मधुर रस में हो जाता है.ट

आठ प्रकार के स्पर्श- कोमल, कठोर, शीत, ऊष्ण, हलका, भारी, चिकना और रूक्ष.

पाँच प्रकार के संस्थान- गोल, लंबगोल, चौरस, लंबचौरस और त्रिकोण.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से चौरासी लाख जीव-योनि से उत्पन्न होनेवाले जीवों की जो विराधना झ्रहिंसाट हुई हो, उसके लिये **मिच्छा मि दुक्कडं** देने में आया है.

[Taste of alkalinity / saline is included in sweet taste.]

Eight types of touch- soft, hard, cold, hot, lightness, weighty, greasy and dry.

Five types of constitution- Round, oval, square, rectangular and triangular.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra, micchā mi dukkaḍam** [pardon for evil deeds] is given for the violence or hurt that has been caused to the living beings originated from eighty four lac forms of life.

३२. अठारह पापस्थान

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्ता-दान,
चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध,
सातवां मान, आठवां माया, नौवां लोभ, दसवां राग,
ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां
अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति-अरति,
सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषा-वाद,
अठारहवां मिथ्यात्व-शल्य- इन अठारह पाप-स्थानों
में से मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो,
कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो,
उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. .१.

शब्दार्थ :-

पहला प्रणातिपात उ पहला जीव-हिंसा झग्राणी को हानि, पीड़ा
पहुंचाना या नष्ट करनाट

32. aṭhāraha pāpasthāna

pahalā prāṇātipāta, dūsarā mṛṣāvāda, tīsarā adattā-dāna,
cauthā maithuna, pāñcavā parigraha, chaṭhā krodha,
sātavā māna, āṭhavā māyā, nauvā lobha, dasavā rāga,
gyārahavā dveṣa, bārahavā kalaha, terahavā
abhyākhyāna, caudahavā paśunya, pandrahavā rati-arati,
solahavā para-parivāda, satrahavā māyā-mṛṣā-vāda,
aṭhārahavā mithyātva-śalya- ina aṭhāraha pāpa-sthāno
me se mere jīva ne jisa kisi pāpa kā sevana kiyā ho,
karāyā ho, karate hue kā anumodana kiyā ho,
una saba kā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam.1.

Literal meaning :-

pahalā prāṇātipāta = first violence to life [to harm, trouble or destroy the
living being]

पहला उ पहला, प्रणातिपात उ जीव-हिंसा
दूसरा मृषावाद उ दूसरा झूठ झूठसत्य, अप्रिय, अपथ्य, लाभहीन और
अवास्तविक वचन बोलनाट
दूसरा उ दूसरा, मृषावाद उ झूठ
तीसरा अदत्ता-दान उ तीसरा चोरी इमालिक द्वारा स्वेच्छा से न दी
हुई वस्तु को ग्रहण करनाट
तीसरा उ तीसरा, अदत्ता-दान उ चोरी
चौथा मैथुन उ चौथा काम क्रीड़ा इतर और मादा का परस्पर जातीय
संबंधट
चौथा उ चौथा, मैथुन उ काम क्रीड़ा
पाँचवाँ परिग्रह उ पाँचवाँ संग्रह इमालिकी भाव या मूर्च्छा से वस्तुओं
का संग्रह करनाट
पाँचवा उ पाँचवाँ, परिग्रह उ संग्रह
छठा क्रोध उ छठा क्रोध
छठा उ छठा, क्रोध उ क्रोध
सातवाँ मान उ सातवाँ मान
सातवाँ उ सातवाँ, मान उ मान
आठवाँ माया उ आठवाँ माया

pahalā = first, praṇātipāta = violence to life
dūsarā mṛṣāvāda = second falsehood [to tell untrue, unpleasant,
unwholesome, unadvantageous and unreal words]
dūsarā = second, mṛṣāvāda = falsehood
tīsarā adattā-dāna = third stealing [to take a thing not given by its owner
voluntarily]
tīsarā = third, adattā-dāna = stealing
cauṭhā maithuna = fourth sexual activities [sexual relations between male
and female]
cauṭhā = fourth, maithuna = sexual activities
pāñcavā parigraha = fifth possessiveness [to hoard things with the feeling of
ownership or attachment towards it]
pāñcavā = fifth, parigraha = possessiveness
chaṭhā krodha = sixth anger
chaṭhā = sixth, krodha = anger
sātavā māna = seventh undue pride
sātavā = seventh, māna = undue pride
āṭhavā māyā = eight deceit

<p>आठवां उ आठवां, माया उ माया नौवां लोभ उ नौवां लोभ नौवां उ नौवां, लोभ उ लोभ दसवां राग उ दसवां राग दसवां उ दसवां, राग उ राग ग्यारहवां द्वेष उ ग्यारहवां द्वेष ग्यारहवां उ ग्यारहवां, द्वेष उ द्वेष बारहवां कलह उ बारहवां कलह बारहवां उ बारहवां, कलह उ कलह तेरहवाँ अभ्याख्यान उ तेरहवाँ दोषारोपण तेरहवाँ उ तेरहवाँ, अभ्याख्यान उ दोषारोपण चौदहवाँ पैशुन्य उ चौदहवाँ चुगली</p> <p>चौदहवाँ उ चौदहवाँ, पैशुन्य उ चुगली पन्द्रहवाँ रति-अरति उ पंद्रहवाँ हर्ष और उद्वेग पन्द्रहवाँ उ पंद्रहवाँ, रति उ हर्ष, अरति उ उद्वेग सोलहवाँ पर-परिवाद उ सोलहवाँ पर-निंदा सोलहवाँ उ सोलहवाँ, पर उ पर, परिवाद उ निंदा</p>	<p>āṭhavā = eight, māyā = deceit nauvā lobha = ninth greed nauvā = ninth, lobha = greed dasavā rāga = tenth attachment dasavā = tenth, rāga = attachment gyārahavā dveṣa = eleventh malice gyārahavā = eleventh, dveṣa = malice bārahavā kalaha = twelfth quarrel bārahavā = twelfth, kalaha = quarrel terahavā abhyākhyāna = thirteenth false accusation terahavā = thirteenth, abhyākhyāna = false accusation caudahavā paśunya = fourteenth back-biting [speaking ill of others behind their back] caudahavā = fourteenth, paśunya = back-biting pandrahavā rati-arati = fifteenth joy and sorrow pandrahavā = fifteenth, rati = joy, arati = sorrow solahavā para-parivāda = sixteenth condemnation [speaking ill of others] solahavā = sixteenth, para-parivāda = condemnation</p>
--	---

सत्रहवाँ माया-मृषा-वाद उ सत्रहवाँ कपट से युक्त झूठ
 सत्रहवाँ उ सत्रहवाँ, माया उ कपट से युक्त
 अठारहवाँ मिथ्यात्व-शल्य उ अठारहवाँ मिथ्यात्व का दोष
 अठारहवाँ उ अठारहवाँ, मिथ्यात्व उ मिथ्यात्व का, शल्य उ दोष
 इन अठारह पाप-स्थानों में से उ इन अठारह पाप-स्थानों में से

मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो उ मेरे जीव ने जिस
 किसी पाप का सेवन किया हो

कराया हो उ कराया हो

करते हुए का अनुमोदन किया हो उ करते हुए का अनुमोदन किया
 हो

उन सब का उ उन सब का / वे सभी

satrahavāṁ māyā-mṛṣā-vāda = seventeenth fraudulent lie
 satrahavāṁ = seventeenth, māyā = fraudulent, mṛṣāvāda = lie
 aṭhārahavāṁ mithyātva-śalya = eighteenth defect of false belief
 aṭhārahavāṁ = eighteenth, mithyātva = of false belief, śalya = defect

ina aṭhāraha pāpa-sthāno me se = from these eighteen places of sins
 ina = these, aṭhāraha = eighteen, pāpa = sins, sthāno = places of, me se = from

mere jīva ne jisa kisi pāpa kā sevana kiyā ho = myself have committed any
 of the sins

mere = my, jīva ne = self, jisa kisi = any, pāpa = the sins, kā = of,
 sevana kiyā = committed, ho = have

karāyā ho = have caused others to commit

karāyā = caused to commit

karate hue kā anumodana kiyā ho = have appreciated on being committed
 by others

karate = committed, hue = being, kā = on, anumodana kiyā =
 appreciated

मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं उ मन-वचन-काया से मेरे

दुष्कृत्य मिथ्या इच्छासङ्गद्वन्द्वकण्डो

मन-वचन-काया से उ मन-वचन-काया से, मिच्छा उ मिथ्या हो,

मि उ मेरे, दुक्कडं उ दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्ता-दान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नौवां लोभ, दसवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति-अरति, सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषा-वाद, अठारहवां मिथ्यात्व-शल्य-इन अठारह पाप-स्थानों में से मेरे जीव ने जिस किसी पाप का सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. १.

विशेषार्थ :-

मिथ्यात्व उ सम्यक्त्व से विपरीत / पदार्थ के यथार्थ स्वरूप पर श्रद्धा न

una saba kā = of all those

una = those, saba kā = of all

mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam = misdeeds of mine may become fruitless by thought, speech and action

mana = thought, vacana = speech, kāyā = action, se = by, micchā = may become fruitless, mi = of mine, dukkaḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

First violence, second falsehood, third stealing, fourth sexual activities, fifth possession, sixth anger, seventh undue pride, eight deceit, ninth greed, tenth attachment, eleventh malice, twelfth quarrel, thirteenth false accusation, fourteenth back-biting, fifteenth joy and sorrow, sixteenth condemnation, seventeenth fraudulent lies and eighteenth defect of false belief [delusions]-- out of these eighteen places of sins, myself have committed any of the sins, have caused others to commit, have appreciated on being committed by others, all those misdeeds of mine may become fruitless by thought, words and actions. 1.

करना एवं कुदेव, कुगुरु और कुधर्म में श्रद्धा रखना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से अठारह प्रकार से किए जानेवाले पापों के लिए क्षमा मांगी गयी है.

Specific meaning :-

mithyātvā [false belief] = opposite of **samyaktva** [right belief] / not to have faith in real form of the substances and to have faith in **kudeva**, **kuguru** and **kudharma**.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, forgiveness is being asked for the sins being committed in eighteen forms.

३३. सव्वस्स वि सूत्र

सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,
इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! इच्छं,
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. १.

शब्दार्थ :-

सव्वस्स वि उ सभी

देवसिअ उ दैवसिक

दुच्चिंतिअ उ दुष्ट इआर्त ध्यान और रौद्र ध्यान से होने वाले चिंतन
संबंधी

दुब्भासिअ उ दुष्ट इस्त्रावद्यट भाषण संबंधी

दुच्चिट्ठिअ उ दुष्ट चेष्टा इनिषिद्ध क्रिया संबंधी

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उ हे भगवान्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान
कीजिए

इच्छाकारेण उ स्वेच्छा से, संदिसह उ आज्ञा प्रदान कीजिए,
भगवन्! उ हे भगवान्!

33. savvassa vi sūtra

savvassa vi devasia duccintia, dubbhāsia, duccitt̥thia,
icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! iccham,
tassa micchā mi dukkaḍam. 1.

Literal meaning :-

savvassa vi = all

devasia = of the day

duccintia = concerning evil thoughts [occurring due to āṛta dhyāna and
raudra dhyāna]

dubbhāsia = concerning evil talking / words

duccitt̥thia = concerning evil deeds [forbidden misdeeds]

icchākāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavān! kindly give me the
permission voluntarily

icchākāreṇa = voluntarily, sandisaha = give me the permission,

bhagavan! = Oh bhagavān!

इच्छं उ मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ
 तस्स मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों
 तस्स उ वे, मिच्छा उ मिथ्या हों, मि उ मेरे, दुक्कडं उ दुष्कृत्य
 गाथार्थ :-

दुष्ट चिंतन, दुष्ट भाषण और दुष्ट प्रवृत्ति संबंधी दिन में लगे सर्व
 इतिचारों का प्रतिक्रमण करने के लिये हे भगवान! स्वेच्छा से आज्ञा
 प्रदान करो. मैं आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ. मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.
 १.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से पापों को संक्षेप में कहकर प्रतिक्रमण किया जाता है.

iccham = i obey accept your orders

tassa micchā mi dukkaḍam = those misdeeds of mine may become fruitless

tassa = those, micchā = may become fruitless, mi = of mine, dukkaḍam
 = misdeeds

Stanzaic meaning :-

Oh bhagavāna! kindly give me the permission voluntarily [to perform the
 pratikramaṇa of all the faults] committed during the day by evil thoughts, evil talks
 and evil deeds. I accept your orders. Those misdeeds of mine may become
 fruitless. 1.

Introduction of the sūtra :-

Briefly mentioning the sins, pratikramaṇa is being done by this sūtra.

३४. इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं? जो मे देवसिओ अइयारो कओ,
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो,
अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,
अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,
नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते, सुए, सामाइए,
तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,
पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं,
चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स,
जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं... १.

शब्दार्थ :-

इच्छामि पडिक्कमिउं? उ मैं प्रतिक्रमण करूं?

इच्छामि उ मैं करूं, पडिक्कमिउं उ प्रतिक्रमण

जो मे देवसिओ अइयारो कओ उ मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार हुए

34. icchāmi paḍikkamiu? sūtra

icchāmi paḍikkamiu? jo me devasio aiyāro kao,
kāio, vāio, māṇasio, ussutto, ummaggo,
akappo, akaraṇijjo, dujjhāo, duvvicintio,
aṇāyāro, aṇicchāvvo, asāvaga-pāuggo,
nāṇe, daṇsaṇe, carittā-caritte, sue, sāmāie,
tiṇham guttiṇam, cauṇham kasāyāṇam,
pañcaṇha-maṇuvvayāṇam, tiṇham guṇa-vvayāṇam,
cauṇham sikkhā-vayāṇam, bārasa-vihassa sāvaga-
dhammassa, jam khaṇḍiam jam virāhiam, tassa micchā mi
dukkadam.1.

Literal meaning :-

icchāmi paḍikkamiu = shall i perform the pratikramaṇa?

icchāmi = shall i perform, paḍikkamiu = the pratikramaṇa

<p>हों काइओ वाइओ माणसिओ उ काया द्वारा, वाणी द्वारा, मन द्वारा उरस्सुतो उ उत्सूत्र इस्सूत्र के विरुद्ध कहने से उम्मग्गो उ उन्मार्ग में इम्मार्ग के विरुद्ध चलने से अकप्पो उ अकल्पनीय इआचार के विरुद्ध वर्तन करने से अकरणिज्जो उ अकरणीय इअयोग्यट कार्य करने से दुज्झाओ उ दुष्ट ध्यान इआर्त्त या रौद्र ध्यानट करने से दुव्विचिंतिओ उ दुष्ट चिंतन करने से अणायारो उ अनाचार इअ आचरणे योग्य आचरणट करने से अणिच्छिअव्वो उ अनिच्छित इअन से न चाहने योग्यट वर्तन करने से असावग-पाउग्गो उ श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण करने से नाणे दंसणे उ ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी चरित्ताचरित्ते उ देश-विरति-चारित्र संबंधी सुए सामाइए उ श्रुत ज्ञान संबंधी, सामायिक संबंधी तिण्हं गुत्तीणं उ तीन गुप्तियों संबंधी चउण्हं कसायाणं उ चार कषाय संबंधी पंचण्ह-मणु-व्वयाणं उ पांच अणु व्रत में</p>	<p>jo me devasio aiyāro kao = the violations which are committed by me during the day kāio vāio māṇasio = by deeds, by words, by thoughts ussutto = by speaking against the sūtras ummaggo = by acting in wrong way akappo = by acting against the prescribed code of conduct akaranijjo = by doing undesirable activities dujjhāo = by evil concentration [ārtta or raudra dhyāna] duvvicintio = by ill-thinking aṇāyāro = by doing improper behaviour aṇicchiavvo = by doing acts undesirable [by the heart] asāvaga-pāuggo = by acting against the code of conduct fit for a śrāvaka nāṇe dansaṇe = regarding jñāna, regarding darśana carittācaritte = about deśa-virati cāritra sue sāmāie = about śruta jñāna, about sāmāyika tiṇham guttiṇam = about three guptis cauṇham kasāyāṇam = about four kaṣāyas</p>
--	--

तिण्हं गुण-व्वयाणं उ तीन गुण व्रत में
 चउण्हं सिक्खा-वयाणं उ चार शिक्षा व्रत में
 बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स उ बारह प्रकार के इन्नत रूपीट श्रावक
 धर्म में
 जं खंडिअं जं विराहिअं उ जो खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों
 इद्रेखें सूत्र नं.२७८

गाथार्थ :-

मैं प्रतिक्रमण करूँ ? काया से, वाणी से, मन से द्वारा, उत्सूत्र कहने से,
 उन्मार्ग में चलने से, अकल्पनीय वर्तन करने से, अकरणीय कार्य करने
 से, दुष्ट ध्यान करने से, दुष्ट चिंतन करने से, अनाचार करने से,
 अनिच्छित वर्तन करने से, श्रावक के योग्य व्यवहार से विरुद्ध आचरण
 करने से, ज्ञान संबंधी, दर्शन संबंधी, देश-विरति चारित्र संबंधी, श्रुत ज्ञान
 संबंधी, सामायिक संबंधी, तीन गुप्तियों संबंधी, चार कषाय संबंधी और पांच
 अणु व्रत में, तीन गुण व्रत में, चार शिक्षा व्रत में— बारह प्रकार के श्रावक
 धर्म में खंडना हुई हो, जो विराधना हुई हो, मेरे द्वारा दिवस में जो अतिचार

pañcaṇha-maṇu-vvayāṇam = in five small [partially observed] vows
 tiṇham guṇa-vvayāṇam = in three characteristic vows
 cauṇham sikkhā-vayāṇam = in four moral [educational] vows
 bārasa-vihassa sāvaga-dhammassa = in twelve types [of vows] of śrāvaka's
 dharma [code of conduct]
 jam khaṇḍiam jam virāhiam = violations which are committed, faults which
 are committed
 tassa micchā mi dukkaḍam = those misdeeds of mine may become fruitless
 [Refer sūtra no.27]

Stanzaic meaning :-

Shall I perform the pratikramaṇa. The violations which are committed by me
 during the day by deeds, by words, by thoughts, by speaking against the sūtras,
 by acting in wrong way, by acting against the prescribed code of conduct, by
 doing undesirable activities, by evil concentration, by ill-thinking, by doing
 improper behaviour, by doing acts undesirable, by acting against the code on
 conduct fit for a śrāvaka, regarding jñāna, regarding darśana, about deśa-virati
 cāritra, about śruta jñāna, about sāmāyika, about three guptis, about four

हुए हों, मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र द्वारा श्रावक के आचार तथा बारह व्रतों में लगे अतिचारों को संक्षेप में वर्णन कर प्रतिक्रमण किया जाता है.

kaṣāyas and in five small vows, in three characteristic vows, in four moral vows-- in twelve types of **śrāvakas** code of conduct, violations which are committed, faults which are committed, those misdeeds of mine may become fruitless.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, **pratikramaṇa** is being done by describing in brief, the violations attached to the conducts and twelve vows of the **śrāvaka**.

२५. भगवान्हं आदि वन्दन सूत्र	१५४
25. bhagavānham ādi vandana sūtra	154
२६. देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? सूत्र	१५५
26. devasia paḍikkamaṇe thāu? sūtra	155
२७. इच्छामि ठामि सूत्र	१५८
27. icchāmi thāmi sūtra	158
२८. पंचाचार के अतिचार	१६४
28. pañcācāra ke aticāra	164
२९. सुगुरु वन्दना सूत्र	१७६
29. suguru vandana sūtra	176
३०. देवसिअं आलोउं? सूत्र	१८६
30. devasiam ālou? sūtra	186
३१. सात लाख	१९०
31. sāta lākha	190
३२. अठारह पापस्थान	१९७
32. aṭhāraha pāpasthāna	197
३३. सव्वस्स वि सूत्र	२०३
33. savvassa vi sūtra	203

३४. इच्छामि पडिक्कमिउं? सूत्र २०५

34. icchāmi paḍikkamiu_? sūtra 205